Toppersnotes
Unleash the topper in you

RAJASTHAN

PHARMACIST

Rajasthan Subordinate & Ministerial Services Selection Board

Part – A

राजस्थान सामान्य ज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

RAJASTHAN PHARMACIST

CONTENTS

राजस्थान का भूगोल

1.	राजस्थान की उत्पत्ति, स्थिति, विस्तार एवं क्षेत्रफल	1
2.	राजस्थान का भौतिक प्रदेश एवं विभाग	8
3.	राजस्थान का अपवाह तंत्र	19
4.	राजस्थान की झीलें	27
5.	राजस्थान की जलवायु	32
6.	राजस्थान में मृदा संसाधन	39
7.	राजस्थान में वन–संसाधन एवं वनस्पति	44
8.	राजस्थान में खनिज सम्पदा	49
9.	राजस्थान में ऊर्जा स्त्रोत	58
10.	राजस्थान में पशुधन	67
11.	राजस्थान में कृषि एवं सिंचाई परियोजनाएँ	71
12.	राजस्थान की जनसंख्या	80
13.	राजस्थान में वन्यजीव एवं इनका संरक्षण	82
14.	राजस्थान में उद्योग	86
15.	जल सरंक्षण एवं संग्रहण	90
16.	राजस्थान में परिवहन	92

राजस्थान का इतिहास एवं कला संस्कृति

1.	प्राचीन राजस्थान का इतिहास	108
	• परिचय	108
	• प्राचीन सभ्याताएँ	110
2.	मध्यकाल राजस्थान का इतिहास	116
	• प्रमुख राजवंश एवं उनकी विशेषताएँ	
	• राजस्थान की रियासतें और अंग्रेजों के साथ संधियाँ	

3. आधुनिक राजस्थान का इतिहास 156
- 1857 की क्रांति 156
- प्रमुख किसान आन्दोलन 158
- प्रमुख जनजातिय आन्दोलन 160
- प्रमुख प्रजामण्डल आन्दोलन 161
- राजस्थान का एकीकरण 166

4. राजस्थान कला एवं संस्कृति 169
- राजस्थान के त्यौहार 169
- राजस्थान के लोक देवता 176
- राजस्थान की लोक देवियाँ 180
- राजस्थान के लोक सन्त एवं सम्प्रदाय 184
- राजस्थान के लोकगीत 189
- राजस्थान की लोकगायन की शैलियाँ 190
- राजस्थान के संगीत 191
- राजस्थान के लोक नृत्य 192
- राजस्थान के लोकनाट्य 194
- राजस्थान की जनजातियाँ 196
- राजस्थान की चित्रकला 202
- राजस्थान की हस्तकलाएँ 207
- राजस्थान का साहित्य एवं प्रकार 209
- राजस्थान की प्रमुख बोलियाँ 214

5. राजस्थान की स्थापत्य कला 216
- किले एवं स्मारक 216
- राजस्थान के जिले एवं धार्मिक स्थल 225
- राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व 228
- राजस्थान का खान–पान एवं वेश–भूषा, आभूषण 233

राजस्थान : राजव्यवस्था

1.	राज्य की कार्यपालिका	236
2.	राज्य की राजनीति	244
3.	सचिवालय	252
4.	संभाग	258
5.	जिला	259
6.	उपखण्ड अधिकारी	262
7.	तहसीलदार	264
8.	पटवारी	268
9.	राज्य निर्वाचन आयोग	269
10.	**RPSC**	272
11.	राज्य सूचना आयोग	273
12.	स्थानीय स्वशासन	275
13.	नगरीय संस्थाएं	281
14.	महानगरीय योजना समिति	286
15.	नगरीय संस्थाएं बोर्ड	287
16.	राज्य वित्त आयोग	289
17.	विधिक अधिकार एवं नागरिक अधिकार–पत्र	290
18.	लोकपाल एवं लोकायुक्त अधिनियम–2013	295
19.	राजस्थान राज्य महिला आयोग	299
20.	राज्य मानवाधिकार आयोग	300
21.	उच्च न्यायालय	301

राजस्थान का भूगोल

राजस्थान की उत्पत्ति

अंगारालैण्ड
पैंजिया का उत्तरी भाग जिससे उत्तरी अमेरिका, यूरोप और उत्तरी एशिया का निर्माण हुआ है।

गोंडवानालैण्ड
पैंजिंया का दक्षिणी भाग जिससे दक्षिणी अमेरिका, अफ्रीका, दक्षिणी एशिया, ऑस्ट्रेलिया तथा अंटार्कटिका का निर्माण हुआ है।

टेथिस सागर
यह एक भूसन्नति है जो अंगारालैण्ड व गोंडवानालैण्ड के मध्य स्थित है।

Note– राजस्थान का निर्माण

GT

G – गोंडवाना लैण्ड
अरावली
हाड़ौती

T – टेथिस सागर
मरूस्थल
मैदान

भौगोलिक प्रदेश
अरावली व हाड़ौती भारत के प्रायद्वीप पठार का हिस्सा है जबकि मरूस्थल व मैदानी भाग भारत के उत्तरी विशाल मैदान का हिस्सा है।

राजस्थान : स्थिति, विस्तार एवं आकार

भारत

उत्तर पश्चिम	

विश्व

	उत्तर पूर्व

एशिया

दक्षिण पश्चिम	

B विस्तार
- अक्षांश – $23^0 3'$ से $30^0 12'$ उत्तरी अक्षांश
- देशांतर – $69^0 30'$ से $78^0 17'$ पूर्वी देशांतर
- क्षेत्रफल – 3,42,239.74 वर्ग किमी.
  (1,32,140 वर्ग मील)

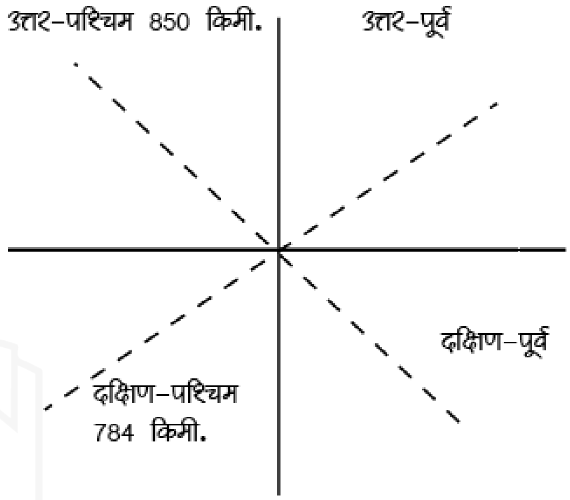

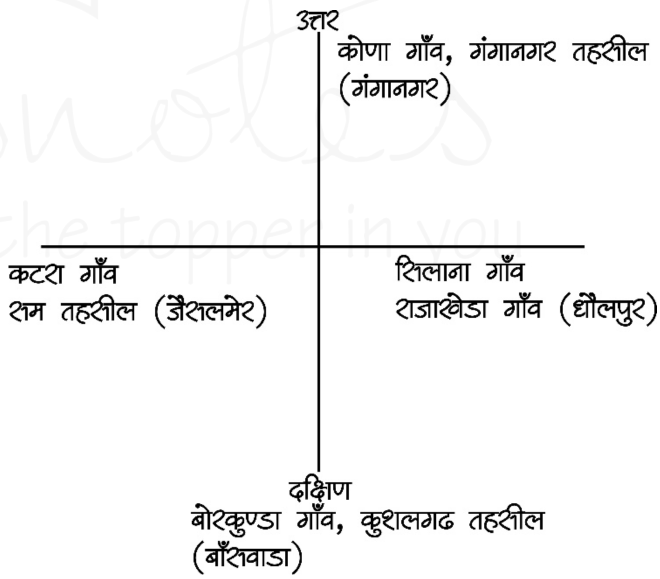

C- आकार
Rhombus – T. H. हैंडले ने कहा
विषम चतुष्कोणीय (रोहम्बस)
पतंगाकार

राजस्थान के क्षेत्रफल संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य

1. राजस्थान का क्षेत्रफल 342239.74 वर्ग किमी है ।
2. यह भारत के क्षेत्रफल का 10.41 प्रतिशत है ।
3. विश्व क्षेत्रफल का राजस्थान 0.25 प्रतिशत धारण करता है ।
4. राजस्थान भारत का सबसे बडा राज्य है ।
5. राजस्थान का सबसे बडा जिला जैसलमेर है । 38401 वर्ग किमी इसका क्षेत्रफल है ।
6. जैसलमेर सम्पूर्ण राजस्थान का 11.22 प्रतिशत क्षेत्रफल धारण करता है ।
7. धौलपुर राजस्थान का सबसे छोटा जिला है जिसका क्षेत्रफल 3034 वर्ग किमी है ।
8. धौलपुर सम्पूर्ण राज्य का .89 प्रतिशत क्षेत्रफल धारण करता है ।
9. जैसलमेर धौलपुर से 12.67 गुणा बडा है ।
10. कर्क रेखा राज्य के डुंगरपुर की सीमा को छूते हुए तथा बांसवाडा के मध्य से होकर गुजरती है ।
11. कर्क रेखा की लम्बाई राज्य में 26 किमी है ।
12. कर्क रेखा पर सबसे लम्बा दिन 13 घंटे 27 मिनट का होता है जो 21 जून को होता है । यह कर्क सक्रांति कहलाता है ।
13. राज्य में पूर्व से पश्चिम समय अंतराल 35 मिनट 8 सैकेण्ड का है ।
14. राज्य का मध्य गांव गगराना नागौर है ।

प्रमुख देश		राजस्थान का क्षेत्रफल (बडा)
जर्मनी	–	बराबर
जापान	–	बराबर
ब्रिटेन	–	दोगुना
श्रीलंका	–	5 गुना
इजराइल	–	17 गुना

राजस्थान के क्षेत्रफल के अनुसार सबसे बडे एवं सबसे छोटे जिले

बडे जिले	छोटे जिले
जैसलमेर	धौलपुर
बीकानेर	दौसा
बाडमेर	डुंगरपुर
जोधपुर	प्रतापगढ
नागौर	

(c) राजस्थान की सीमा:-

↓

अन्तर्राष्ट्रीय ↓ 1070 Km — 5920 Km — अन्तर्राज्यीय ↓ 4850 Km.

अन्तर्राज्यीय सीमा एवं उन पर स्थिति जिले

सीमा- 4850 किमी.

पडोसी राज्य	उनकी सीमा पर राजस्थान के जिले
पंजाब	हनुमानगढ, गंगानगर
हरियाणा	जयपुर, भरतपुर, हनुमानगढ, सीकर, चुरू, झुंझुनु, अलवर
उत्तरप्रदेश	भरतपुर, धौलपुर
मध्यप्रदेश	धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर, भीलवाडा, कोटा, बांसवाडा, बांरा, झालवाड, प्रतापगढ, चित्तोडगढ
गुजरात	बाडमेर, जालौर, सिरोही, उदयपुर, डुंगरपुर, बांसवाडा

Toppersnotes Unleash the topper in you

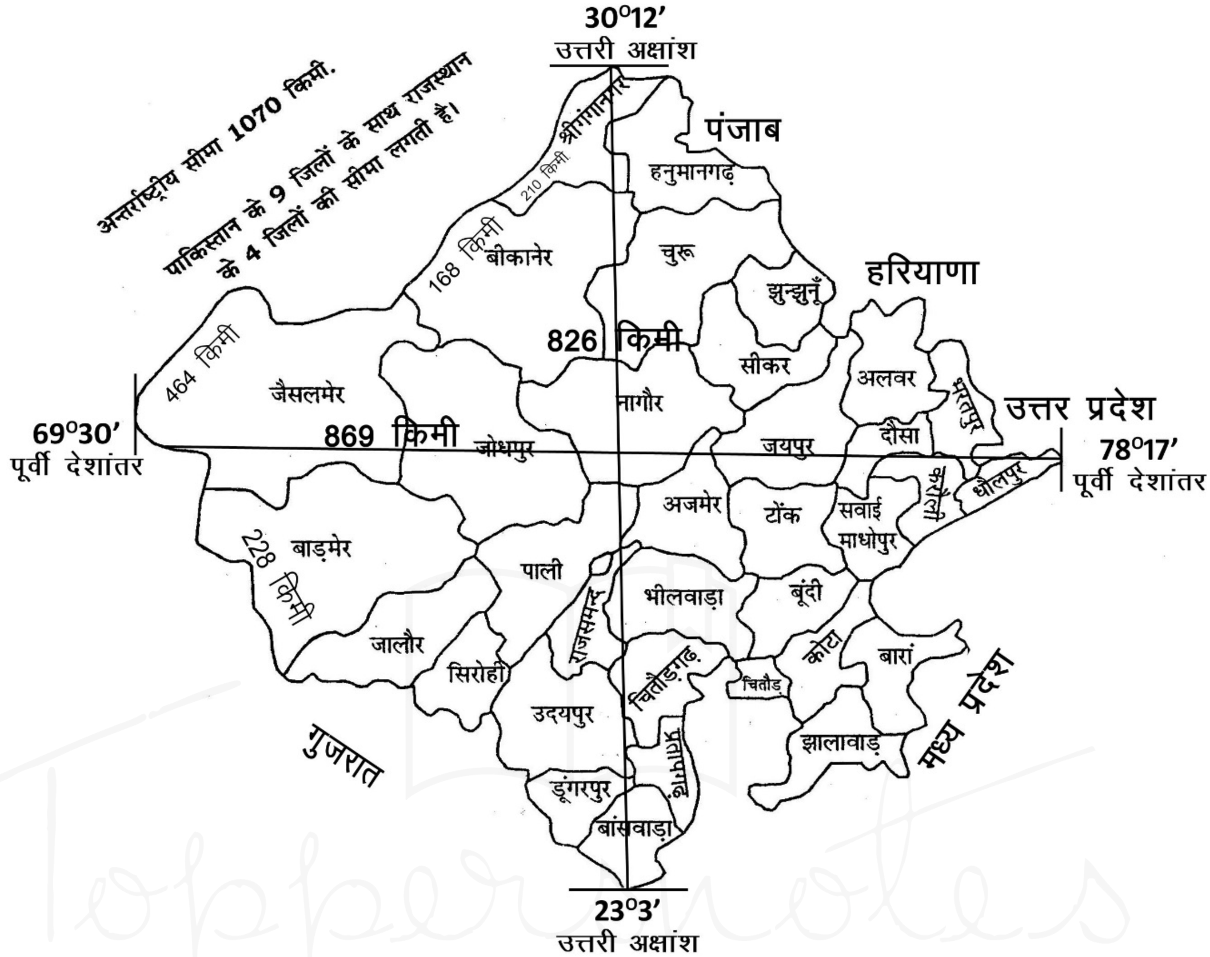

अन्तर्राष्ट्रीय सीमा उस पर स्थिति जिले

नोटः-

(1) राजस्थान के वे जिले जो दो राज्यों के साथ सीमा बनाते हैः-

- हनुमानगढ – पंजाब . हरियाणा
- भरतपुर – हरियाणा . U.P.
- धौलपुर – U.P. + M.P.
- बाँसवाडा – M.P. गुजरात

(2) कोटा व चित्तौडगढः- राजस्थान के वे जिले है जो एक राज्य (M.P.) से दो बार सीमा बनाते है।

(3) कोटा :- राजस्थान का वह जिला है जो राज्य के साथ दो बार सीमा बनाता है वह अविखण्डित है।

(4) चित्तौडगढः- राजस्थान का वह जिला है जो राज्य के साथ दो बार सीमा बनाता है व विखण्डित है।

(5) भीलवाडाः- चित्तौडगढ को 2 भागो में विखण्डित करता है।

पाक प्रान्त

- पंजाब
  - बहावलनगर
  - बहावलपुर
  - रहीमयारखानपुर
- सिन्ध
  - घोटक्की
  - सुक्कर
  - संघार
  - खैरपुर
  - अमरकोट
  - थारपारकर

अन्तर्राज्यीय सीमा पर

सर्वाधिक सीमा — झालावाड (M.P.)

सबसे कम — बाड़मेर (गुजरात)

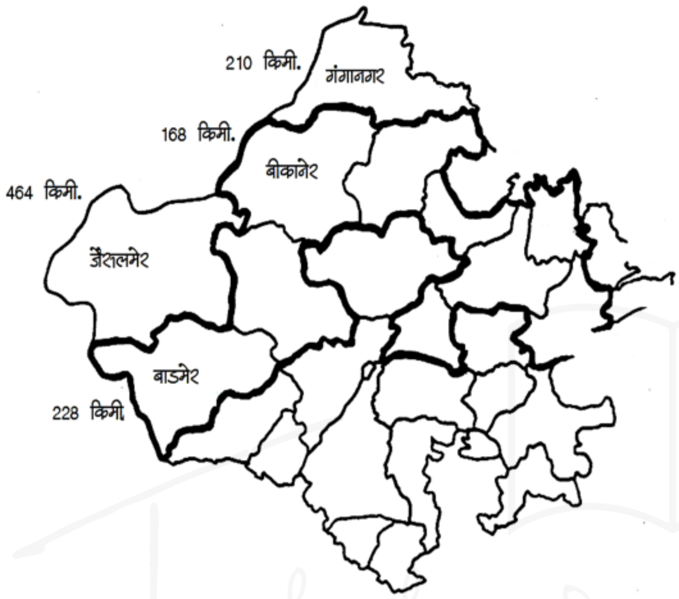

- 25 जिले : राजस्थान के सीमावर्ती जिले
- 23 जिले : अन्तर्राज्यीय सीमावर्ती
- 4 जिले : अन्तर्राष्ट्रीय सीमावर्ती
- 2 जिले : अन्तर्राज्यीय व अन्तर्राष्ट्रीय सीमावर्ती (श्रीगंगानगर . बाड़मेर)

8 जिले : राजस्थान के वे जिले जो अन्तः स्थलीय (Land locked) सीमा बनाते हैं ।

Trick – जोधा बूँटी राजा आज ना पा दो

जोधपुर बूंदी टोंक राजसमन्द अजमेर नागौर पाली दौसा

पाली सर्वाधिक 8 जिलों के साथ सीमा बनाता है । जो निम्न है –
बाड़मेर, जोधपुर, जालौर, सिरोही, उदयपुर, राजसमंद, अजमेर, नागौर ।

अजमेर :- चित्तौड़गढ के बाद राजस्थान का दूसरा विखण्डित जिला
राजसमन्द :- राजसमन्द अजमेर का दो भागों में विखण्डित करता है ।
इसका जिला मुख्यालय इसके नाम से नहीं है ।
राजनगर राजसमन्द का जिला मुख्यालय है ।

नागौर :- नागौर सर्वाधिक संभाग मुख्यालयों के साथ सीमा बनाता है ।
(जयपुर, अजमेर, जोधपुर, बीकानेर)

सीमावर्ती विवाद

मानगढ हिल्स विवादः-
स्थिति = बाँसवाडा
विवाद = राजस्थान-गुजरात के मध्य

बजट 2018-19 में इसके विकास के लिए 7 करोड का प्रस्ताव रखा गया है ।

1. पाकिस्तान का बहावलपुर का सर्वाधिक सीमा गंगानगर के साथ बनाता है ।
2. न्यूनतमक सीमा बाडमेर के साथ बनाता है ।
3. पाकिस्तान के 9 जिले भारत के साथ सीमा बनाते हैं ।
4. पाकिस्तान के 6 जिले जैसलमेर के साथ सीमा बनाते हैं ।
5. भारत के 4 जिले पाकिस्तान के साथ सीमा बनाते हैं ।
6. जैसलमेर सर्वाधिक सीमा पाकिस्तान के साथ बनाता है ।
7. बीकानेर सबसे कम सीमा पाकिस्तान के साथ बनाता है ।
8. नाम- सर सिरील रेड रेडक्लिफ रेखा
9. निर्धारण तिथि – 17 अगस्त 1947
10. शुरूआत – हिन्दूमलकोट
11. अंत – शाहगढ(बाडमेर)
12. राजस्थान की कुल सीमा का 18: (1070 किमी.) है।
13. पाकिस्तान प्रान्त राज्य = 2 (पंजाब व सिन्ध)
14. श्रीगंगानगर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर सबसे निकटतम जिला मुख्यालय है ।
15. बीकानेर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा पर सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय है ।
16. धौलपुर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा से सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय है ।

17. बीकानेर सबसे कम सीमा पाकिस्तान के साथ बनाता है ।
18. नाम- सर सिरील रेड रेडक्लिफ रेखा
19. निर्धारण तिथि - 17 अगस्त 1947
20. शुरूआत - हिन्दूमलकोट
21. अंत - शाहगढ(बाडमेर)
22. राजस्थान की कुल सीमा का 18ः (1070 किमी.) है।
23. पाकिस्तान प्रान्त राज्य = 2 (पंजाब व सिन्ध)
24. श्रीगंगानगर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर सबसे निकटतम जिला मुख्यालय है ।
25. बीकानेर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा पर सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय है ।
26. धौलपुर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा से सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय है ।

Start हिन्दूमलकोट(श्रीगंगानगर) 210किमी.

↓

बीकानेर 168 किमी. (Minimum)

↓

जैसलमेर 464 किमी. (Maximum)

↓

End शाहगढ(बाडमेर) 228 किमी

Toppersnotes
Unleash the topper in you

राजस्थान के प्रादेशिक के परिवर्तन का स्वरूप एवं वर्तमान नाम

प्राचीन नाम	बदला स्वरूप	वर्तमान नाम
योद्धेय	जोहयावाटी	गंगानगर
जांगल	भटनेर	बीकानेर
अहिच्छत्रपुर	अहिपुर	नागौर
गुर्जर	गुरजान्ना	मण्डोर-जोधपुर
शाकंभरी सांभर	अजयमेरू	अजमेर
श्रीमाल स्वर्णगिरि	गेलोर भीनमाल	बाडमेर
वल्ल	दुंगल	जैसलमेर
अर्बुद	चन्द्रावती	सिरोही
विराट	रामगढ	जयपुर
शिवि	चित्तौड	उदयपुर
कांठल	देवलिया	प्रतापगढ
पालन	दशपुर	झालावाड
व्याघ्रवाट	वांगड	बांसवाडा
जाबालीपुर	स्वर्णगिरि	जालौर
कुरू		भरतपुर, करौली
शौरसेन		धौलपुर
हयहय		कोटा, बूंदी
चंद्रावती		आबू, सिरोही
छप्पन मैदान		प्रतापगढ, बांसवाडा के छप्पन ग्राम समूह
मेवल		डूंगरपुर, बांसवाडा के बीच का भाग
ढूंढाड		जयपुर
थली		चुरू, सरदार शहर
हाडौती		कोटा, बूंदी, झालावाड
शैखावटी		चरू, सीकर, झुंझनू

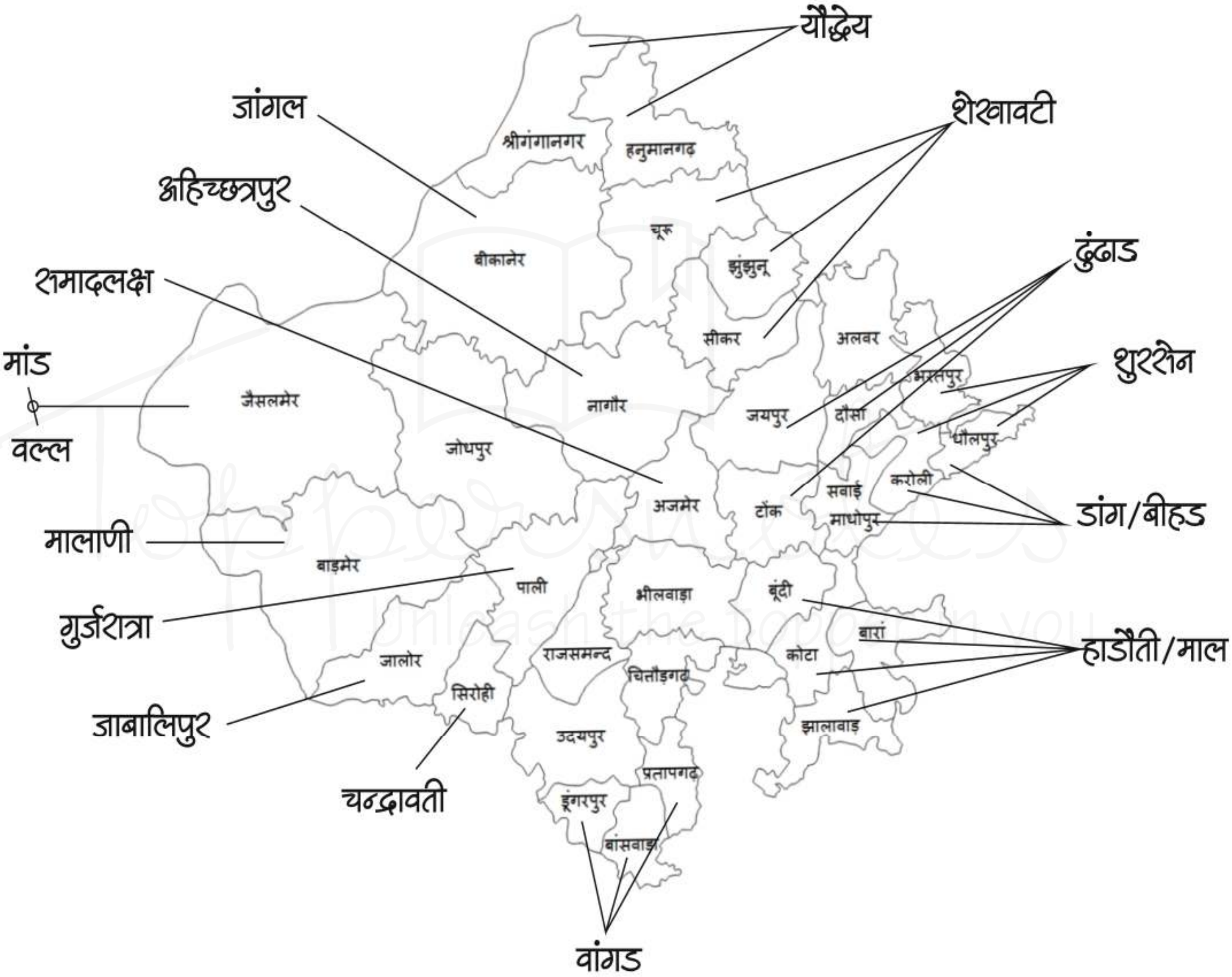
यौद्धेय
जांगल
शेखावटी
अहिच्छत्रपुर
ढूंढाड
स्मादलक्ष
मांड
वल्ल
शुरसेन
मालाणी
डांग/बीहड
गुर्जरात्रा
हाडौती/माल
जाबालिपुर
चन्द्रावती
वांगड
श्रीगंगानगर
हनुमानगढ़
चूरू
बीकानेर
झुंझुनू
सीकर
अलवर
भरतपुर
जैसलमेर
नागौर
जयपुर
दौसा
धौलपुर
जोधपुर
अजमेर
टोंक
सवाई
माधोपुर
करौली
बाड़मेर
पाली
भीलवाड़ा
बूंदी
बारां
जालोर
राजसमन्द
चित्तौड़गढ़
कोटा
सिरोही
उदयपुर
झालावाड़
प्रतापगढ़
डूंगरपुर
बांसवाड़ा

राजस्थान के भौतिक प्रदेश एवं विभाग (Physical Regions & Divisions

भूमिकाः भौगोलिक प्रदेशों के अध्ययन में सभी भौतिक, सांस्कृतिक एवं पारिस्थितिकीय पक्षों को संमाहित किया जाता है । किसी भौगोलिक प्रदेश का आधार स्तम्भ है– 'भौतिक प्रदेश'

भौतिक प्रदेश वह विशिष्ट क्षेत्र होता है जिसमें उच्चावच, जलवायु, मृदा, वनस्पति इत्यादि में औसत आन्तरिक समरूपता पायी जाती है ।

निष्कर्ष एवं समसामयिक पक्ष : उपर्युक्त के समग्र विवेचन, विश्लेषण एवं परिशीलन के उपरान्त सार रूप में यह निरूपति किया जा सकता है कि वर्तमान में जलवायु परिवर्तन, आधुनिकीकरण, शहरीकरण, औद्योगिकरण निर्वनीकरण, मानवीय हस्तक्षेप इत्यादि के कारण भौतिक प्रदेश की संरचना एवं पर्यावरण में नकारात्मक परिवर्तन हो रहे हैं जिसे रोकने के लिए धारणीय विकास एवं भौतिक प्रदेशो के संरक्षण की नितान्त आवश्यकता है ।

राजस्थान के भौतिक प्रदेशो को उच्चावच एवं धरातल के आधार पर मोटे तौर पर चार भागों में एवं विभिन्न उप विभागों मे विभक्त किया जा सकता है ।

1. पश्चिम मरूस्थलीय प्रदेश
   - शुष्क रेतीला प्रदेश (मरूस्थल)
   - लूणी-जवाई मैदान (लूणी बेसिन)
   - शेखावटी प्रदेश (बांगर प्रदेश)
   - घग्घर का मैदान

2. मध्यवर्ती अरावली प्रदेश - उपविभाजन
   - उत्तरी अरावली
   - मध्य अरावली
   - दक्षिणी अरावली

3. पूर्वी मैदान प्रदेश - उपविभाजन
   - बनास बेसिन
   - चम्बल बेसिन
   - मध्य माही बेसिन (छप्पन का मैदान)

4. दक्षिणी-पूर्वी प्रदेश (हाडौती प्रदेश) उपविभाजन
   - अर्द्धचंद्राकर पर्वत श्रेणियां
   - नदी भ्रमित मैदान
   - शाहबाद का उच्च स्थल
   - झालावाड का पठार
   - डग-गंगधार का उच्च क्षेत्र

भौतिक प्रदेशो की सामान्य जानकारी

क्षेत्र	क्षेत्रफल	जनसंख्या	जिले	मिट्टी	जलवायु
मरूस्थल	61.11 या 2/3	40 प्रतिशत	12	बलुई	शुष्क व अर्द्धशुष्क
अरावली	9 प्रतिशत	10 प्रतिशत	13	पर्वतीय या वनीय	उपार्द्र
पूर्वी मैदान	23 प्रतिशत	39 प्रतिशत	10	जलोढ	आर्द्र
हाडौती, दक्षिण पूर्वी	6.89 प्रतिशत	11 प्रतिशत	7	काली या रेगूर	आर्द्र या अति आर्द्र

राजस्थान में भूगर्भीक संरचना भारत के अन्य प्रदेशों की तुलना में विशिष्ट है। यहां प्राचीनतम प्री - कैम्ब्रीयन युग के अवशेष अरावली के रूप में मौजूद है।

यहां आद्य महाकल्प, पुराजीवी महाकल्प, प्राग्जीवी महाकल्प एवं नवजीवी महाकल्प के साक्ष्य मौजूद है। बाप बोल्डर बैड (बाप गांव जोधपुर) - पुराजीवी महाकल्प के परमियन कार्बोनीफैरस युग के अवशेष मिले है जिन्हें हिमवाहित माना जाता है। कुछ गोलाश्म खंडो पर स्पष्ट लकीरीं कें चिन्ह सुरक्षित है जो संभवतः हिमवाहित होने के कारण घर्षन उत्पन्न हुए है।

भादुरा बालुकाश्म (जोधपुर) - यहां जीवाश्म युक्त बालुकाश्म मिले है जो बाप और भादुरा आस पास मिले है। इन बालुकाश्म का निर्माण सामुद्रिक अवस्था मे हुआ है।

(I) उत्तरी-पश्चिमी मरूस्थलीय-प्रदेश
   (i) निर्माणकाल-टर्शयरीकाल (क्वार्टनरी काल में प्लीस्टोसीन) इसे भारत का विशाल मरूस्थल अथवा थार के मरूस्थल के नाम से जाना जाता है।

इसे मरू प्रदेश का विस्तार लगभग 175000 वर्ग किमी. है। जो सम्पूर्ण राजस्थान का 61.11% प्रतिशत है। इस मरूस्थल का राजस्थान कृषि आयोग के अनुसार सिरोही के अतिरिक्त 12 जिलों मे है। लेकिन वास्तविकता में सिरोही सहित 13 जिलों में है।

श्री गंगानगर, हनुमानगढ, चुरू, बीकानेर, झुझनु, सीकर, जोधपुर, जालौर, बाडमेर, जैसलमेर, पाली, नागौर।

राजस्थान में कुल मरूस्थलीय ब्लॉक-85

(ii) विस्तारः-
   (a) लम्बाई - 640किमी.
   (b) चौडाई - 300किमी.
   (c) औसत ऊँचाई - 200-300 मीटर(औसत 250 मी.)

(iii) तापक्रम - ग्रीष्मकाल - 49°C
   शीतकाल - -3°C
   औसत - 22°C

(iv) वर्षा - 20 से 50 सेंटिमीटर तक होती है।

(v) वनस्पित - zero fight या शुष्क वनस्पित पाई जाती है।

(vii) मिट्टी - रेतीली बलुई मिट्टी

(iii) मरूस्थल का ढाल :-

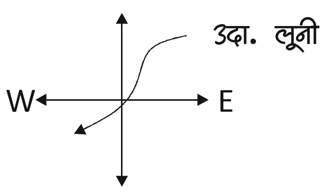

(iv) मरूस्थल का अध्ययन :-

मरूस्थल को अध्ययन की दृष्टि से 2 भागों में बाँटा जाता है।

(a) शुष्क मरूस्थल (0-25cm)

(b) अर्द्धशुष्क मरूस्थल या वांगड प्रदेश (25-50cm)

नोटः-''25 cm. समवर्षा रेखा'' मरूस्थल को शुष्क व अर्द्धशुष्क दो भागों में बाँटती है।

(a) शुष्क मरूस्थल

25 cm. से कम वर्षा वाले भौतिक प्रदेश को शुष्क मरूस्थल कहा जाता है।

शुष्क मरूस्थल को पुनः दो भागो में बाँटा जाता हैः-

- बालूका स्तूप मुक्त (41.5%)
- बालूका स्तूप युक्त (58.5%)

कारण :- पथरीला मरूस्थल जिसे ''हमादा'' कहा जाता है।

विस्तार - जैसलमेर (max.)
बाडमेर
जोधपुर

पवन → मिट्टी → निक्षेपण→ बालूका स्तूप

नोटः-बालूका स्तूप

जब पवन के द्वारा मिट्टी का निक्षेपण किया जाता है तो बनने वाली स्थलाकृति को बालूका स्तूप कहा जाता है जो सर्वाधिक जैसलमेर जिले में है।

बालूका स्तूप को टीले/टीबे भी कहते है। जैसलमेर में इन्हें धरियन नाम से जाना जाता है।

बालूका स्तूप के प्रकार

				प्रकार	सर्वाधिक
(i)	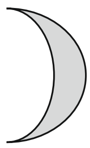	पवन ←	अर्द्धचन्द्राकार	बरखाना	शेखावटी (चूरू)
(ii)	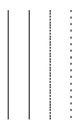	पवन ←	समकोण	अनुप्रस्थ	बाडमेर, जोधपुर
(iii)	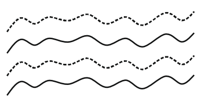	← पवन ←	समान्तर	अनुदैर्घ्य/रैखीय	जैसलमेर
(iv)		←		तारानुमा	1. जैसलमेर 2. सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

(V) पेराबोलिक

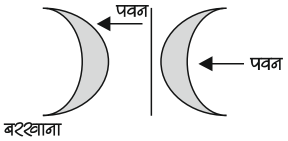

- बरखान के विपरीत या हेयरपिन जैसी आकृति का बालूकास्तूप ''पेराबोलिक'' कहलाते है ।

नोटः- यह बालूकास्तुप राजस्थान में सर्वाधिक पाए जाते है ।

(vi) सीफ (Seif)

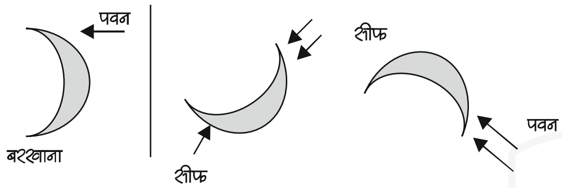

बरखान के निर्माण के दौरान जब पवन की दिशा में परिवर्तन होता है तो बरखान की एक भुजा एक दिशा में आगे की ओर बढ जाती है जिसे सीफ कहा जाता है ।

(vii) शब काफीसज (Scrub Coppies)

मरूस्थल में झाडियों के पास पाए जाने वाले छोटे बालूका स्तूप

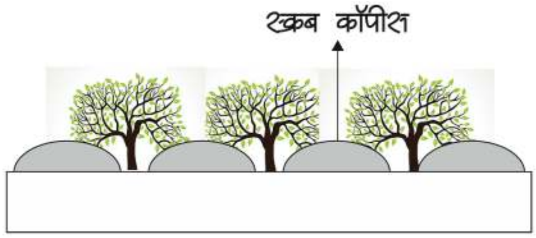

यह सर्वाधिक जैसलमेर में पाए जाते है ।

नोटः- 1 बरखान - अनुप्रस्थ
2 सीफ - अनुदैर्ध्य/रेखीय
3 सर्वाधिक बालूका स्तूप - जैसलमेर
सभी प्रकार के बालूकास्तूप - जोधपुर

(b) अर्द्धशुष्क मरूस्थल या वांगड प्रदेश

25-50 सेमी वर्षा या शुष्क मरूस्थल व अरावली के मध्य का भौतिक प्रदेश अर्द्धशुष्क मरूस्थल कहलाता है । इसे अध्ययन की दृष्टि से पुनः 4 भागो में बाँटा जाता हैः-

1. लूनी बेसिन
2. नागौर उच्च भूमि
3. शेखावाटी अन्तः प्रवाह
4. घग्घर बेसिन

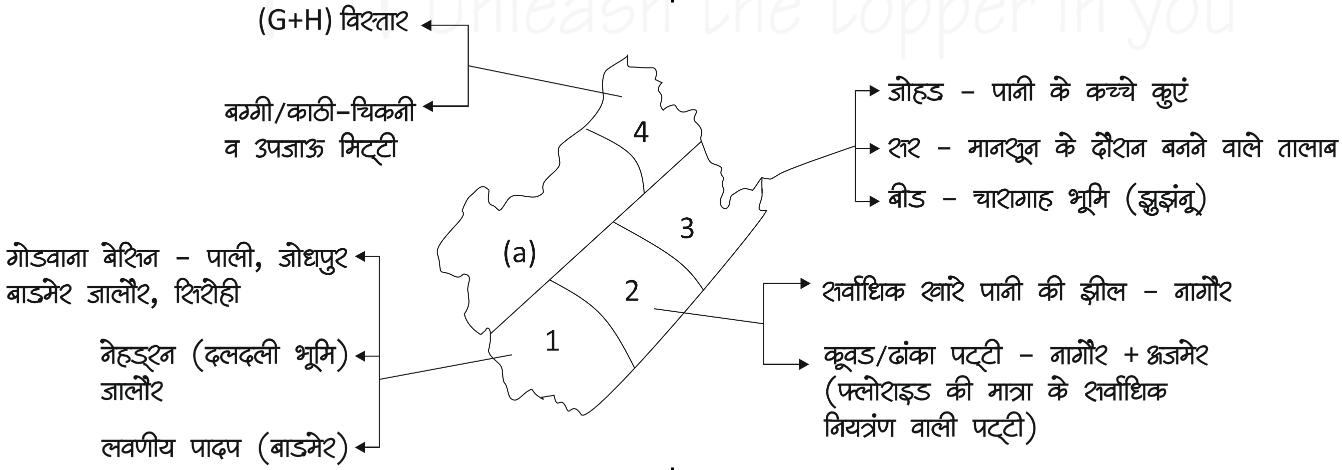

पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश से संबंधित विशेष तथ्य

पश्चिमी राजस्थान में परम्परागत रूप से जल संरक्षण की अनेक पद्धतियाँ पायी जाती है जो हैः-

पद्धतियाँ

1. प्लाया/खडीन/ढाढ झीलः-

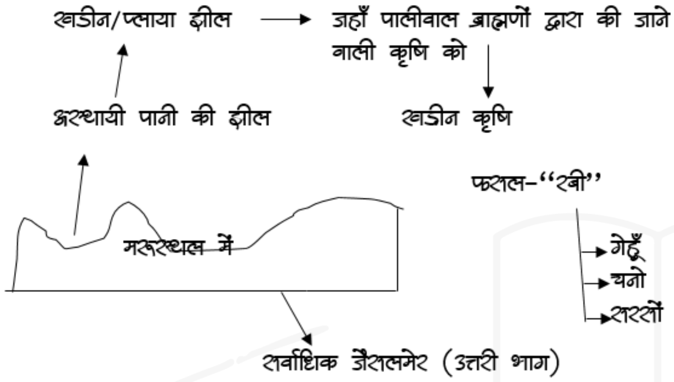

2. आगोरः- घर के आँगन में निर्मित जल संग्रहण के लिए बना टाका या झालरा आगोर कहलाता है ।

3. नाडीः- प्राकृतिक गड्ढे में जल का संग्रहण नाडी कहलाता है जिसके जल का उपयोग पशुपालन एवं दैनिक कार्यो के लिए किया जाता है ।
   नाडी विशेष रूप से जोधपुर में है ।

4. बावडीः- सामान्यतः सीढीनुमा चोकोर तालाब बावडी कहलाता है ।
   बावडी शंक जाति द्वारा प्रारंभ की गई बावडियों का शहर -बूंदी

5. बेरा या बेरीः- खडीन या टोबा या नाडी से रिसने वाले जल के सदुपयोग के लिए इसके चारों ओर छोटे-छोटे कुएँ बना दिये जाते है जिन्हे जैसलमेर के आसपास के क्षेत्रों में बेरा या बेरी कहा जाता है ।

6. टोबाः- कृत्रिम रूप से निर्मित गड्ढे में जल संग्रहण टोबा कहलाता है ।

7. जोहड या खूँः- शेखावाटी क्षेत्र में पाये जाने वाले कुएं जोहड या खूँ कहलाते है जो ढोबा या नाडी में रिसने वाले जल का सदुपयोग करने के लिए निर्मित किये जाते है ।

पश्चिमी राजस्थान में हरियाली के प्रकार या क्षेत्र

पश्चिमी राजस्थान सामान्यत शुष्क एवं मरूस्थलीय क्षेत्र है फिर भी कहीं-कहीं जल की उपलब्धता के कारण यहाँ हरियाली मिलती है। इस तरह पश्चिमी राजस्थान में हरियाली के भिन्न-भिन्न रूप निम्नांकित है-

1. मरूद्भिद् (**XEROPHYTE**)
   अरावली के पश्चिम में पायी जाने वाली कंटीली झाडियाँ एवं वनस्पति मरूद्भिद कहलाती है । इनकी जडे अधिक गहरी तथा पतियाँ काँटो के रूप में होती है । जैसे बबूल, कैर, बेर, नागफनी, आक, फोग, खेजडी, खींप, रोहिडा, झरबेरी इत्यादि ।

2. चाँधन नलकूप
   जैसलमेर का वह क्षेत्र जहाँ मीठा भूमिगत पानी मिलता है। चाँधन नलकूप कहलाता है। इसे 'थार का घडा' भी कहते है । इसका कारण यहाँ पौराणिक सरस्वती नदी के अवशेष होना बताया जाता है ।

3. मरूद्यान या नखलिस्तान (**OASIS**)
   मरूस्थल में वह क्षेत्र जहाँ जल की उपलब्धता होने के कारण वह क्षेत्र हरा-भरा हो जाता है, जैसे चाँधन नलकूप, श्री कोलायत झील ।

4. तल्ली/मरहो/बालसन
   मरूस्थल में बालूका स्तूपों के मध्य मिलने वाली निम्न भूमि तल्ली/मरहो/बालसन कहलाती है ।

5. रन/टाट
   मरूस्थल में लवणीय, दलदली व अनुपजाऊ भूमि को रन/टाट कहा जाता है । रन सर्वाधित जैसलमेर में पाए जाते है ।

नोट :-

प्रमुख रन	स्थान
तालछापर	चूरू
परिहारी	चूरू
फलौदी	जोधपुर
बाप	जोधपुर
थोब	बाडमेर
भाकरी	जैसलमेर
पोकरण	जैसलमेर (परमाणु परीक्षण 1974 (18 मई) 1998 (11,13 मई)

6. प्लाया/खारी झीलें/सेलिना या सेलाइना
बालूका स्तूपों के मध्य निम्न भूमि में जल एकत्रित होने से निर्मित खारी झीलें प्लाया कहलाती है ।

7. लाठी सीरीज
जैसलमेर के उत्तर पूर्व में 60 किमी लम्बी भूगर्भीय जल पट्टी लाठी सीरीज कहलाती है। यह क्षेत्र 'सेवण या लीलोण' घास के लिए प्रसिद्ध है। करडी, धामण

8. मरूस्थलीकरण/मरूस्थल का मार्च
- क्याः- मरूस्थल का आगे बढना/विस्तार
- दिशाः- SW - NE
- विस्तार सर्वाधिक :-हरियाणा
- सर्वाधिक योगदानः- बरखान
क्योकि इनकी गति या स्थानान्तरण सर्वाधिक होता है ।

नोट :-
- Erg (अर्ग) → रेतीला
- रेग → दोनो (रेतीला + पथरीला)
- हमादा → पथरीला

निष्कर्षण
मरूस्थल में इसी हरियाली के कारण पेड-पोधे जीव जन्तु एवं मानव-जीवन मिलता है। यही कारण है कि थार का मरूस्थल विश्व का सर्वाधिक जैव-विविधता वाला मरूस्थल है ।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य
मावठ/महावठ
भूमध्यसागरीय चक्रवातों या पश्चिमी विक्षोभ से शीतकाल में होने वाली वर्षा मावठ कहलाती है ।

यह रबी की फसल विशेषकर गेहूँ के लिए अमृत तुल्य होती है। इस कारण इसे ''गोल्डन ड्रॉप्स (Golden Drops) भी कहा जाता है ।

समगांव
जैसलमेर जिले में अवस्थित पूर्णतः वनस्पतिरहित क्षेत्र है जहाँ फिल्मों की शूटिंग होती है तथा यह एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल भी है। यहां 10 सेमी. बारिश होती है ।

आंकलगाँव
राजस्थान का एकमात्र ''वुड फॉसिल्स पार्क''(लकडी के जीवाश्म का) है। यहाँ 8 करोड वर्ष पुराने जुरासिक काल के लकडी के अवशेष मिले है। यह राष्ट्रीय मरूउद्यान का ही भाग है ।

मरूस्थलीकरण
मरूस्थल का निरन्तर प्रसार जिसके कारण भूमि का धीरे-धीरे बंजर होते जाना ही मरूस्थलीकरण कहलाता है । इसे 'मार्च पास्ट ऑफ डेजर्ट' भी कहते है ।

लघु मरूस्थल/थली
थार के मरूस्थल का पूर्वी भाग जो कच्छ के रन से बीकानेर तक विस्तृत है, लघु मरूस्थल कहलाता है । यह अपेक्षाकृत नीचा है । इसे बीकानेर के आस-पास के क्षेत्र में इसे थली तथा यहाँ के निवासियों को थलिया भी कहते है ।

धरियन
जैसलमेर जिले में कम आबादी वाले स्थानों पर पाये जाने वाले स्थानान्तरित बालुका स्तूप धरियन कहलाते है ।

सर/सरोवर
विशेष रूप से शेखावाटी एवं सामान्यतः पश्चिमी राजस्थान में तालाबों को सर या सरोवर कहा जाता है । जैसे-अलसीसर, मलसीसर, कोडमदेसर आदि ।

पीवणा
- पश्चिमी राजस्थान में पाया जाने वाला सर्वाधिक विषैला सर्प पीवणा है ।
- पीवणा सर्प डंक नहीं मारता बल्कि रात्रि के सोते समय व्यक्ति को श्वास के द्वारा जहर देकर मार देता है ।

मध्यवर्ती अरावली प्रदेश

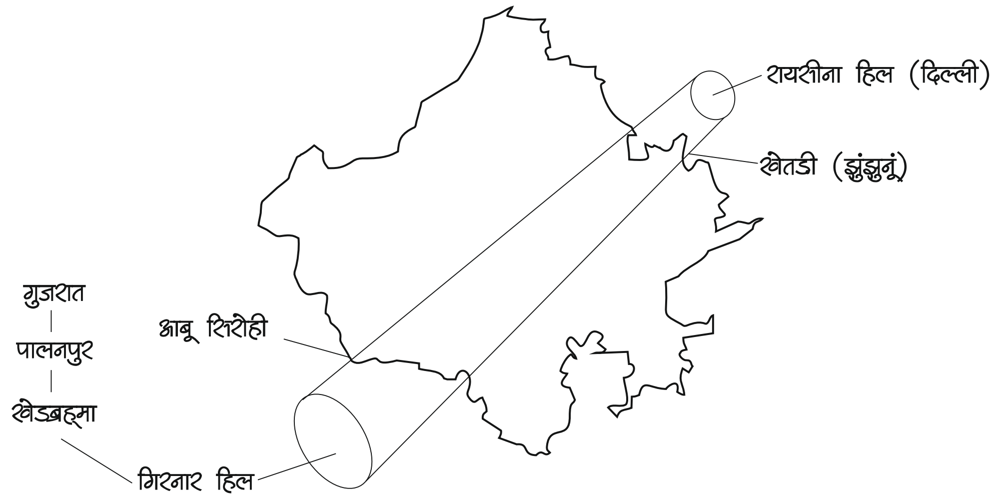

1. विस्तार - इसका विस्तार दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व की ओर, पालनपुर (गुजरात) से रायसिन्हा की पहाडी पालम (दिल्ली) तक 692 किमी है। राजस्थान में इसकी लम्बाई 550 किमी है । इसका विस्तार मुख्यतः 9 जिलों डूंगरपुर, बांसवाडा, सिरोही, उपदयपुर, राजसमंद, चित्तौडगढ, अजमेर, पाली, भीलवाडा में है ।
2. अरावली पर्वतमाला का उद्गम अरब सारब के मिनीकॉय द्वपी से होता है ।
3. अरब सागर को अरावली का पिता माना जाता है ।
   - राजस्थान में अरावली खेडब्रह्म (सिरोही) से खेतडी (झुन्झुनू) तक
4. क्षेत्रफल - यह भू-भाग राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का 9 प्रतिशत तथा जनसंख्या का लगभग 10 प्रतिशत धारण किये हुए हैं ।
5. इसकी औसत ऊँचाई 930 मी. है ।
6. जलवायु एवं वायुदाब- यहाँ उपार्द्र जलवायु पायी जाती है। औसत वायुदाब एवं औसत वायुवेग एवं औसत तापक्रम पाया जाता है ।
7. वर्षण- यहाँ 50-80 से.मी. के मध्य वर्षा होती है । 50 सेमी. वर्षा रेखा इसे पश्चिमी मरूस्थल क्षेत्र से अलग करती है ।
8. खनिज एंव चट्टानें:- यहाँ पर तांबा, लोहा, चाँदी, मैंगनीज आदि धात्विक खनिज एवं ग्रेनाइट, नील, सिस्ट इत्यादि प्राचीनतम चट्टानें मिलती है ।
9. प्रकृति- गोंडवाना क्षेत्र का यह भाग प्रीकेम्ब्रियन काल में निर्मित एवं अवशेषी वलीत पर्वत माला के रूप में है ।
10. मृदा- यहॉ पर पर्वतीय मिट्टी तथा पर्वतीय अपरदन से निर्मित काली तथा लाल मिट्टियाँ पायी जाती हैं ।
11. वनस्पति- यहाँ पर पर्वतीय वनस्पति जिनकी जडे कम गहरी होती है, पायी जाती है तथा यहाँ मुख्यतः मक्का की खेती होती है ।
12. उच्चावच- इस क्षेत्र में पहाड-पहाडी, डूँगर-डूँगरी, दर्रे या नाल पाये जाते हैं ।

अरावली का अध्ययन

अध्ययन की दृष्टि से अरावली को 3 भागों में बाँटा जाता है–

	उत्तरी अरावली	मध्य अरावली	दक्षिणी अरावली
विस्तार	जयपुर-झुंझुनूँ	अजमेर	सिरोही-राजसमन्द
सर्वोच्च चोटी	रघुनाथगढ	टॉडगढ	गुरुशिखर

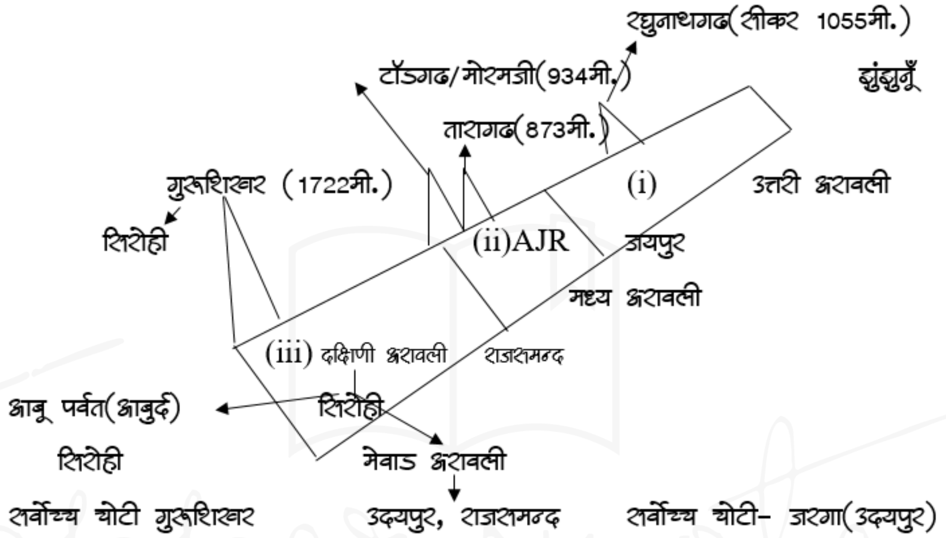

नोटः–

1. अरावली की सर्वाधिक ऊँचाई– सिरोही
   अरावली की सर्वाधिक विस्तार– उदयपुर
2. अरावली का सबसे कम विस्तार व न्यूनतम ऊँचाई– अजमेर

3 अरावली की सर्वोच्च चोटी(अवरोही क्रम में):–

	Trick	चोटी	स्थान	ऊँचाई
1	गुरु	गुरुशिखर	सिरोही	1722 मी.
2	से	सेर	सिरोही	1597 मी.
3	दिलसे	देलवाडा	सिरोही	1442मी.
4	जरा	जरगा	उदयपुर	1431मी.
5	आस	अचलगढ	सिरोही	1380 मी.
6	कुंभा	कुंभलगढ	राजसमन्द	1224 मी.
7	रघुनाथ	रघुनाथगढ	सीकर	1055 मी.
8	ऋषि	ऋषिकेश	सिरोही	1017 मी.
9	का	कमलनाथ	उदयपुर	1001 मी.
10	सज्जन	सज्जनगढ	उदयपुर	938 मी.
11	मोर	मोरमजी/टॉडगढ	अजमेर	934 मी.
12	खों में	खो	जयपुर	920 मी.
13	सा	सायरा	उदयपुर	900 मी.
14	त	तारागढ	अजमेर	873 मी.
15	बोली	बिलाली	अलवर	775 मी.
16	रोज	रोजा भाकर	जालौर	730 मी.
17	बोली	–	–	–

अरावली की नाल/दर्रे

पर्वतों के मध्य नीचा और तंग रास्ता जो दो ओर के स्थानों को जोडता है इसे नाल कहा जाता है।

प्रमुख नालः–

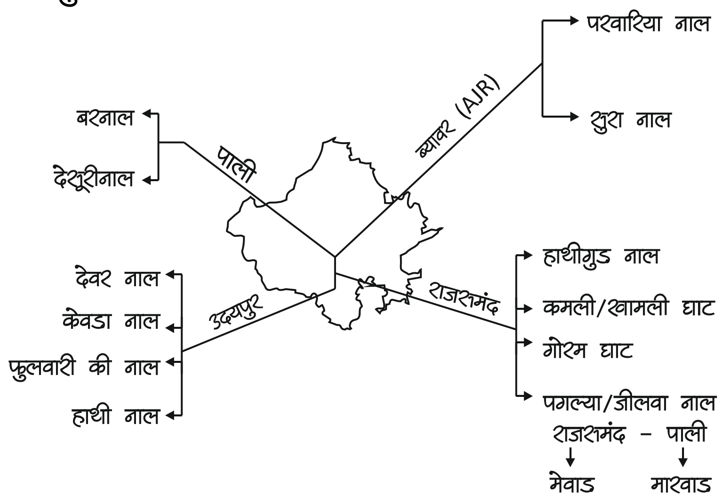

नोटः–

1. अरावली में सर्वाधिक नाल राजसमन्द में स्थित है।
2. फुलवारी नाल अभ्यारण्य से सोम, मानसी, वाकल नदियाँ बहती है।